

॥ श्री ॥

द्वारका महातम.

हिंदुस्तानी भाषामें

छपाके प्रसिद्ध करनेवाला

भीमजी भगवानजी वायडा—द्वारकापुरी.

धी राइझींग स्टार प्रीन्टींग प्रेसमें व्यास कालीदास
पीतांबरने छपा—राजकोट.

संवत १९६९. सने १९१३.

किंमत अमूल्य.

ुक्रमणिका.



॥ श्री ॥

द्वारका महातम भाषांतर प्रारंभ.

अध्याय १.

ऋषियोका ब्रह्मा पास जानां वहासे पातालमें बलीराजा ओर प्रलहाद पास जानां.

श्लोक.

नारायणं नमस्कृत्य नरंचैव नरोतमं ॥
देवी सरस्वतीं व्यासं ततो जय मुदीरयेत् ॥ १ ॥

नारायणकुं सबीमें श्रेष्ट भगवानकुं ओर सरस्वती देवी, व्यासजी उनकुं प्रणाम करके ग्रंथका आरंभ करते हे.

कळियुग काल प्रगट होनेसे रुषि मुनिओ गभराये, के कळियुगका प्रबल दीवसो दीवस बोत बधते हे, ओर धर्मका नास होके अधर्म फेलाते हे, एसा महा कळियुगमें अपने श्री क्रस्न भगवान बीना केसें रहेंगे, भगवान कहां होगा. एसा बीचारमें सब पडेथे, इतनेमें उद्दालक रुषि कहेने लगाके हे रुषिओ अपने जगतका पिता ब्रह्मा पास जाके विष्णु भगवान कहां हे ये बात पुछ देखे.

एसा कहेना सुनके रुषि मंडल ब्रह्माकी पास गये, ब्रह्माने प्रसन होके पुछाके आप कायकुं पधारे हो, एसा सुनके रुषिओ अरज करनेकुं लगेके, अब महा कलीयुग चलनेकुं लगे हे, सो अब विष्णु भगवान कहां बीराजते हे सो हमकुं कहो.

ब्रह्मा कहेतेहे के हमतो मत्स्य कच्छ रुपका पुजन करते हे, विष्णु कहां हे सो मेरेकुं मालुम नहीं हे, एसा ब्रह्माजीका बचन सुनके रुषिओ कहनेकुं लगेके आपकुं

ये मालुम नहीं हे, तो हम प्रयागमें जाकर हमेरा देह नीकालेंगे, क्युं के भगवान बिना पृथ्वीपर हमसें नहीं रहा जायगा. एसा रुषिका कहेना सुनके, ब्रह्माजी कहने लगाके तुमकुं एक उपाय दीखाते हे के आप पातालमें जहां बलीराजा रहेते हे वहां जाओ, वहां श्री क्रस्न परमात्माका भक्त प्रलहादजी हे ये तुमकुं दीखायगा. एसा सुनके पातालमें बलीराजा पास रुषिओ गये, वहां प्रहलादजी ओर बलीराजा सामने लेनेकुं गये, ओर सत्कार करके आनेका कारण पुछा. तब रुषि कहने लगेके, महाराज कळियुग पृथ्वीपर चलतेहे उसने धर्मका नासकरके अधर्मकु बढाया हे, वेद मार्गका नास हुवा हे, जारकर्म, चोरका बोत जोर हे, पुरुषोकुं स्त्रीओने बस कीया हे, ब्राह्मणोका ब्रह्मपणा गया, एसा बखतमें हमलोक विस्नु भगवान सिवाय किस तरहसें रह सके, उसके लीए हमकुं उनका रहनेका स्थल आप बताओ.

प्रल्हादजी कहेतेहे—हे महारुषि पश्चिम समुद्र कीनारे कुसने स्थापेली कुसस्थली

नामे नगरी हे, वहां समुद्रकी साथ मीली हुइ गोमती नदी महा पाप नीवारण करनेवाली वहेती हे, ये नगरींकुं ये जमानेमें द्वारका कहतेहे, वहां साक्षात श्री क्रस्न भगवान संख, चक्र, गदा, पद्म, आयुध धारण करके रहेतेहे, वहां जो लोक ये कलीयुगमें जाते हे उसकुं मुक्ति मीलती हे. एसा प्रहलादजीका कहेना सुनके रुषियो कहेने लगा यदु कुलका नास हुवा पीछे पृथ्वीका भार उतारके श्री क्रस्न भगवान प्रभासमें पीपलेका थडका आश्रय लेके स्वधाममें पधार गये हे. ओर द्वारकाकुं चारे बाजुसें समुद्रने जलमें डुबा दींया हे ओर आप क्युं कहेतेहोके भगवान द्वारकामें हे?

श्री द्वारका महातमका अध्याय १ ला समाप्त.



अध्याय २.

श्री क्रस्न दुर्वासाकुं मीला और रुकमणि श्राप.

बलीराजा प्रल्हादजीकुं कहेते हे–विष्णु पृथ्वीमें ओखादेसमें कैसे रहेते हे ये बात हमकुं कहो.

प्रल्हादजी कहेते हे–उग्रसेन राजा पृथ्वीका राज्य करता था, ओर श्री क्रस्न भगवान द्वारकाकुं शोभावता था. एसा श्री क्रस्न भगवान लक्ष्मीजीका पती एक दीन सभामें बेठेथे, उस बखत उधवजी श्री क्रस्नकुं कहेने लगेके, अत्रिके पुत्र पवीत्र दुर्वासा रुषि यात्रा करनेकुं आये हे एसा सुनके श्री क्रस्न उठके आनंदमे रुकमणीका मकानमें आये ओर दुर्वासा रुषि यहा आये हे एसा खुसखबर कहा. ओर कहेने लगेके अपने दोनु दुर्वासा रुषिकुं भोजनके लीये आमंत्रण करनेकुं जावे. एसा अपना पतीका

वचन सुनके प्रेमसें सती रुकमणि रथमें बेठके श्री क्रस्न ओर रुकमणि दोनुं जहा दुर्वासा मुनी था ये मकानमें गये. और भीष्मक राजाकी पुत्री रुकमणिने दुर्वासा रुषिकुं दंडवृत कीये. ओर दोनुका कुसल समाचार पुछके कहाके हाल तुम कहां रहेते हो, तुमकुं कीतना लडका हे, कीतनी स्त्री हे सो वीस्तारसें कहो.

श्री क्रस्न कहेते हे–समुद्रने हमकुं बार योजन पृथ्वी दीया हे, वहां हमने सोनेकी नगरी बनाई हे, जहां नव लाख सोनेका महेल हे, एसी नगरीमें अपनी क्रपासें में वहां रहेताहुं, एसा सुनके दुर्वासा रुषि हसे ओर कहेने लगेके आपकी नगरीमें कीतना आदमी रहेते हे, आपकुं राणी कीतनी हे, लडका लडकी कीतनी हे सो कहो.

श्री क्रस्न कहेते हे--हे महाराज हम आपकुं सभी बात कहेते हे. सोल हजार एकसो आठ तो मेरी स्त्री हे, ये सबमें रुकमणि मेरी पटराणी हे ओर अकेक स्त्रीकुं

दस दस पुत्र ओर अकेक पुत्री हे. छ न करोड जादव मेरा परीजन हे, दुसरी असंख्य प्रजा नगरीमें रहेती हे.

दुर्वासा मुनी भगवानकुं कहेते हे--अबी तुम कहो के मेरी पास तुम कोन कामके खातीर आये हो. एसा सुनके श्री क्रस्नने कहा के आप प्रसन हो सो हमेरा मकानमें पधारके आप मकाम पावन करो के आपका चरणका जलकुं सीरपर चडाके हम प्रसन होवे.

दुर्वासा मुनी कहेते हे--हे श्री क्रस्न! हम बडा क्रोधी हे, मेरेकुं कायकुं मकान पर बुलाते हो! जेसेके अग्नीमें सीतलताका गुण नहीं हे, एसे ये दुर्वासामें बीलकुल क्षमाका गुण नहीं हे.

प्रल्हादजी कहेते हे--श्री क्रस्नकी बात स्वीकारके दुर्वासा मुनी भगवानका रथमें

बेठके चलने लगे. रस्तामें दुर्वासा कहेने लगेके तुम दुर्वासा मुनीकुं नहीं पीछानते हो ! ये रथके घोडे छोडके तुम रुकमणी सहीत दोनु रथमें घोडेके बदल जुतके हमकुं लेजाओ.

श्री क्रस्न कहेते हे--आप जेसे कहोगे एसा हम करेंगे.

प्रल्हादजी कहेते हे--श्री क्रस्न ओर रुकमणि रथमें जुते ओर दुर्वासा मुनी रथमें बेठे ओर चलने लगे. उसकुं देखनेसे सब देवताओ कहेने लगेके श्री क्रस्न परमात्माका प्रेम ब्राह्मणोपर केसाहे के रुकमणी समेत रथमें जुते हे. एसा कहेके देवताओ जयजयका पुकार करने लगे. द्वारका तरफ चलते रस्तेमें रुकमणिजीकुं पाणीकी प्यास लगी ओर भगवानकुं कहेने लगी के महाराज ये रीसाल ब्राह्मणकुं खेंचनेसे मेरेकुं थक लगी हे ओर पाणीकी पीयास लगी हे सो पीके अपने मंदीरमें ले चलो. रुकमणिका बचन

सुनके श्री क्रस्न भगवानने पृथ्वीकुं पाउंसें दबाके वहां गंगाजी प्रगट करके रुकमणिजीकुं पाणी पीलाया. ये देखके दुर्वासाकुं क्रोध चडा ओर रुकमणिकुं श्राप दीया.

दुर्वासा कहेते हे--हे रुकमणि हमेरी आज्ञा बीना तुमने जल पीया जीससें श्री क्रस्न भगवानका तुमेरेकुं बियोग होगा एसा कहके रथमेसें नीचे दुर्वासा उतर पडे ओर रुकमणिकुं श्राप होनेसे रोनेकुं लगी ओर भगवानकुं कहेने लगीके तुमेरी बीना मेरा दीन केसें कटेंगे.

श्री क्रस्न कहेते हे--हम हमेसां दो बखत तुमेरी पास आयगा. जो आदमी द्वारकामें मेरा दर्सन करेंगे, उसकुं तुमेरा दर्सनबी करना पडेगा, जो तुमेरा दर्सन नहीं करे तो जात्राका अरधा फल जात्रीकुं मीलेगा, उनमें संसय नहीं हे.

 प्रल्हादजी कहेते हे--रुकमणिकुं एसा कहके भगवानने दुर्वासा मुनीकी पास क्षमा

माागी. ओर बहार बगीचेमें दुर्वासाका चरण धोकर जल अपना सीरपर चडाया.

श्री द्वारका महातम अध्याय २ रा संपूर्ण.

अध्याय ३.

भागीरथी गंगाका पधारना.

रुकमाणिजी मुर्छामें हे एसा समुद्रकुं मालुम हुवा क्युं के अगले जन्ममें समुद्रकी पुत्री थी इस लीये समुद्र धीरज देनेकुं लगा इतनेमें नारदजी आकास मार्गसे आ पहोंचे.

नारदजी कहेते हे के--हे कल्याणी ? ब्राह्मणका श्रापसे तुमेरा पति दुर हुवा एसा मानके तुम नाराज न होना क्युंके ये तुमेरेसें कबी दुर नहीं रहेते हे. ये तो कलीयुगमें ब्राह्मणकी आज्ञाकुं आदमी माने उनके लीये लीला दीखाडते हे. एसा कहेके नारदजी

बोलते बंध हुवे तब समुद्रने कहा के मेरी आज्ञासें ये भागेरथी गंगा यहां पधारे हें सो देहधारी होके तुमेरी पास बातचीत करेंगे ओर उसका जलसें यहां नंदनवन जेसा सुंदर वन होगा एसा कहके समुद्र ओर नारदजी चले गये.

प्रल्हादजी कहेते हे--समुद्रने कहाथा उस माफिक भागीरथी गंगा वहां आके जलसें सुंदर वन बनाया. समुद्र साथ मीलनेवाली गंगाजी वहां आनेका सबकुं मालुम हुवा जब द्वारकानिवासी सब वहां जानेकुं लगे. ये बात दुर्वासा मुनीकुं मालुम हुइ. दुर्वासा क्रोधायमान होके कहेने लगेके.

दुर्वासा कहेते हे–हमेरा बचन कोन मीथ्या करनेवाला हे ? मेरा श्रापका अनादर करके रुकमणि वन बनाके आनंद करती हे उनके लीये उनकुं श्राप देताहुं के सब वृक्षो फल बीनाका होयगा ओर गंगाजी सीवका मस्तक उपर रहेते हे सो अब देहधारी होके यहां न रहे एसा बचन सुनतेमे सब वृक्ष सुका गये ओर गंगाजी अपने स्थानकुं चले गये.

प्रल्हादजी कहेते हे--गंगाजी ओर वन स्थानकुं गये जीससें रुकमणिने बहोत दुःख लगा उससें रुकमणिने अपना बस्त्रका फांसा गलामें डालके श्री क्रस्नका ध्यान लगाके लटकनेका नक्की कीया. अंतर्यामी परमात्माकुं मालुम हुवाके तुरत आप गरुडपर बेठके रुकमणि पास पधारे. ओर फांसा नीकालके कहेनेकुं लगा के हे देवि ? हम जीवरुप हे तुम बुद्धिरुप हो एसा हे ओर तुमने वियोग माना ये ठीक नहीं. देखो जो दुर्वासाने श्राप दीया हे ओ दुर्वासा मुनी आते हे. इतनेमें दुर्वासा पश्चाताप करते आपहुंचे.

दुर्वासा कहेते हे--हे जगका मातापीता श्री क्रस्न भगवानकी क्षमा ओर रुकमणिकी क्षमा मागताहुं एसा कहेके कहेने लगे, हे भगवान आप द्वारका पधारो.

श्री क्रस्न कहेते हे--हे महाराज ब्राह्मण जो कहे सो होवे ये बात हमने कबुल कीये हे जीससे हे मुनी ? दीनमें दो बख्त हम यहां आवेंगे ओर उसका मनका समा-

धान करेंगे. जब हम वैकुंठ पधारेंगे तब त्रीकमजीकी मूर्तीमें तेज रहेगा. भागीरथी गंगा सबके दुख नास करेंगे एसा कहेके उधरही रुषिकुं रखके भगवान द्वारका पधारे. श्री क्रस्न भगवानकुं दुर्वासा कहेने लगेके तुम मत जाओ, हम तुमेरी पर प्रस्न हे कुच्छ बरदान मांगो.

भगवान कहेते हे--महाराज आप प्रसन होतो यहां दुवारकामें आप बास करो एसा सुनके ये बात कबुल करके दोनु द्वारकाजीमें रहे.

श्री द्वारका महातमका अध्यांय ३ रा संपूर्ण.



अध्याय ४ था.

द्वारका यात्राका महातम.

प्रल्हादजीने रुषियोकुं यात्रासें होनेवाला लाभ कहाथा सो.

प्रल्हादजी कहेते हे--हे ब्राह्मणो हम गुप्त बात आपकुं कहेते हे सो सुनो, मनुष्यो द्वारका जानेका जहांसे मनमें नीश्चय करते हे उसी बखत उनका पीतृओ नर्कमेंसे मुक्त होके स्वर्गमें जाके आनंद करते हे. द्वारका जानेवाला आदमी अपना गामसें मकान छोडके द्वारकाजीके रस्ते चलनेकुं लगेके एक एक कदमे अश्वमेघ यज्ञका फल प्राप्त होते हे. ओर द्वारकाधीसकी धजाका दर्सन होवे के जो आदमी गाडी, घोडा, वहानपरसें उतरके पेदल चले उसका पांच प्रकारका पाप नास होते हे ओर स्वर्गका द्वार जेसा द्वारका नगरमें आके स्नान, दर्सन, गौकादान, सेजादान, जमीनदान ओर

१४

श्राध श्रधासें करेंगे उनकी सात पेढीका पीतृ स्वर्गमें जाके आसीरवाद देइंगे ओर द्वारका चार धाममें बडा धाम ओर सातपुरीमें पुरी हे जीससें यहां तो अवस्य उपर कहा मुजब जो करते हे उनकुं फीर जन्म नहीं लेना पडता ओर अपनी जींदगीमें यात्रा करना ये तो अपना ओर पीत्रुका हीत खातर हे उसके लीये चंद्रशर्माका प्रेतकी योनीमेंसे उद्धार हुवा हे सो देखो.

श्री द्वारका महातम अध्याय ४ था संपूर्ण.

अध्याय ५ मा.

प्रेत योनीमेंसे चंद्रशर्माका ओद्धार होना.

मार्कंड्य रुषि कहेते हे--एक बखत इंद्रद्युमन राजाकुं मार्कंड्य रुषिने कहा के

कलीयुगमें श्री क्रस्न भगवान द्वारकामें वसते हे व्हां जानेसे ओर गोमती स्नान करनेसें क्या फ.ल मीलते हे सो सुनो. पूर्वे चंद्रसर्मा नामका माळव देसका एक सदा-सीवका भक्त ब्राह्मण था. ए ब्राह्मण कोइ दीन अग्यारसका वरत नहीं करतेथे. एसा करते करते ७९ सालकी उमर हो गई. एक दीन प्रभासक्षेत्रमें सोमनाथ महादेवका दर्सन करनेके लीये ये ब्राह्मण गये उस बखत प्रभासमेंसें बोत आदमी द्वारका जात्राके लीये आतेथे. उसने चंद्रशर्माकुं द्वारका जानेका कहा लेकीन नहीं गये. एकादसी रहेनेका बोत महातम हे एसा कोईने उनकुं समजाया लेकीन नास्तीक ब्राह्मण कहेने लगाके सीववृत हम करते हे. एसा कहेके एकादसीका ब्रृत छोडके अपना मकानमें गये. वहां स्वप्नामें उसका बापदादा प्रेत हुवाथा उसने देखाव दीया ओर कहने लगाके तुम डरना नहीं हम तुमेरा बापदादा चचा वीगेरे हे. हम बोत दुखी होनेसे तुमेरी पास आया हे. एसा सुनके चंद्रसर्मा कहेने लगाके हमेरा बापदादाने दान, पुन बोत

कीया हे सो ओ प्रेत होवे नहीं, एसा सुनके चंद्रशर्माकुं इसका पूर्वजो कहेने लगाके हमेरा कुलमें तुम एकादसीका वृत करके रात्रीका जागरण नहीं करेंगे वहांतक हम प्रेतमेंसे नहीं छुटेंगे. चंद्रशर्मा कहेने लगाके प्रेतपणा छुटनेका रस्ता देखाओ. प्रेतो कहेते हे के गयाजीमें, प्रयागमें, पुष्कलमें, कुरुक्षेत्रमें, अयोध्यामें, उजणमें, मथुरां, आबु ओर दुसरा लाखो तीर्थों करनेसें प्रेतोमेंसे छुटेगा नहीं. फक्त गोमतीमें स्नान करके श्राध करनेंसे प्रेतसें मुक्त होते हे. गोमतीका जो जल हे सो प्रेतयोनी नीकालनेवाला हे. कलीयुगमें गोमतीमें जाके पीत्रींकुं जल देनेसें मुक्ती होती हे. उनके लीये तुम द्वारकाजी जाके, दर्सन करके, श्राध करके, हमेरी मुक्ती करके हमारी प्रेतयोनीसें मुक्ती करना.

एसा सुनके चंद्रशर्मा द्वारकामें जाके श्राध कर्म करके, गोमती स्नान करके श्री क्रस्नकी पूजा अर्चाकरके थोडे समयमें श्री क्रस्न भगवानकुं प्रसन कीया भगवान कहेने लगाके हे चंद्रशर्मा तेरीं भक्तिसे हम प्रसन हे. तेरा पीत्रुओकी प्रेतमेंसे मुक्ती

हुइ हे. चंद्रशर्माका पीत्रुओ स्वप्नामें कहेने लगाके तेरा कल्याण हो हमेरी मुक्ती हो गई हे, एसा कहेके गये ओर भगवानने आसीरवाद दीया के तुम सो वरसका आयुष भोगवेंगे ओर सो वरस पीछे मेरी पुरीमें मरेगा एसा वरदान दीया. भगवान अंतरध्यान हो गये ओर चंद्रशर्माने सो वरस पीछे दुवारकामें देह छोड दीया.

श्री द्वारका महातम अध्याय ५ मा संपूर्ण.

अध्याय ६ ठा.

पृथ्वीपर गोमतीजीका पधारना.

द्वारकांजीमें गोमतीजी कैसे पधारे ओर कब पधारे ओर गोमती स्नान करनेंसे क्या फल मीलता हे सो मालुम होनेके लीये नीचे खुलासा लीखा जाता हे.

द्वारका समुद्रमें डुबी पीछे श्री क्रस्न भगवानकी नाभी कमलमेंसे ब्रह्माजी प्रगट

हुवा जब भगवानने नवी श्रष्टी उत्पन करनेका ब्रह्माजीकुं कहा.

ब्रह्माजी कहेते हे–हमारेकुं परीब्रह्म परमात्मा श्री क्रस्न भगवानका रुपकुं देखना हे सो नवी सृष्टि बनाके जंजालमें नहीं पडेंगे. एसा कहे के पश्चिम समुद्रके किनारे जाके तप कीया जब आकासवाणी हुइ के हे मुनी अबी चक्र नीकलेंगा ओर पीछेसे शेषषायी भगवान नीकलेंगे. उसी मुजब चक्र नीकले उनकी पूजा करके पीछे भगवानकी राह देखते मुनि ब्रह्माजीका ध्यान धरके बेठे. ओर ब्रह्माजीने गंगाजीकुं कहा तुम भगवानके लीये पृथ्वीपर जाओ वहां तुम गोमतीजीका नामसे प्रगट होना. ओर वशिष्ठके पीछे जाना उससे वशिष्ठकी पुत्री ये नामसे सब पीछानेंगे, एसा बचन सुनके वशिष्ठकी पीछे पीछे समुद्र तीरे गये वहां शेषनागपर भगवान प्रगट हुवा. उसका चर्ण धोये पीछे गोमती समुद्रमें मील गई.

श्री द्वारका महात्म अध्याय ६ ठा संपूर्ण.

अध्याय ७ मा.

चक्रतीर्थका महातम.

भगवान गोमतीजीकुं कहेते हे के—हरहमेसा हम यहां द्वारकामें नीवास करेंगे. ओर तुमेरा जलमें जो आदमी स्नान करेंगे उसका सबी पाप दोष नास होगा ओर प्रथम सुदर्सनचक्र नीकलेहे जीससे ये तीर्थ चक्रतीर्थ नामसे प्रसिद्ध होगा. ओर छोटा बडा सबी· जातका चक्र वहां नीकलेंगे. वहां स्नान करनेंसे एक हजार अश्वमेघ यज्ञ करनेका पुन्य होता हे ओर आदमीकुं मुक्ति मीलती हे. ये चक्रोमेंसे बार चक्रवाला पाषाणकु द्वादसात्मा ओर सुदर्शन कहा जायगा. दो चक्रवाले लक्ष्मी नारायण, तीनवाले अच्युत, चारवाले जनार्दन, पांचवाले वासुदेव, छवाले पद्युमन, सातवाले बलदेव, आठवाले पुरसोतम, नववाले नवव्युह, दसवाले दसअवतार, अग्यार

वाले अनिरुध ओर बारवाले द्वादसात्मा ओर उनसे ज्यादा चक्रवाले अनंत एसा नाम वाले चक्रोकी पुजा करनेंसे उत्तम स्थानकी प्राप्ति होती हे.

श्री द्वारका महातम अध्याय ७ मा संपूर्ण.

अध्याय ८ मा.

गोमती स्नान विधि.

प्रथम गोमतीजीमें स्नान करती बखत प्रणाम करके हाथमें दर्भ, तुलसी, अक्षत, श्रीफल, गंगाभेट, पंचरत्न लेके पूर्व मुख बेठके विधिपूर्वक पंडा अगर सुकलकी पाससे मंत्रोपचार कराके स्नान करनां, यहां स्नान करनेंसे कुरुक्षेत्रमें सुर्य ग्रहणमें स्नान करने जीतना पुन्य होता हे ओर सिंह राशीका ब्रहस्पती होवे उस बखत गादावरीमें स्नान

२१

करनेंसे जो पुन्य होवे उससे अधिक फल गोमती स्नानमें हे. गोमती श्राध करनेंसे हजार अश्वमेघका जो फ.ल मीलता हे एसा फल गोमतीमें श्राधका हे ओर सात पेढीका पित्री तारके मोक्ष करनेवाली गोमती हे. जो आदमी चहाय वहां मरा होवे उसका अस्ति (हडी) यहां डालनेंसे मुक्ति मीलती हे उसमें शंका नहीं हे.

श्री द्वारका महातम अध्याय ८ मा संपूर्ण.

अध्याय ९ मा.

सतयुगमें दुर्वासाका गोमतीजीमें पधारना.

सतयुगमें दुर्वासा मुनी फीरते फीरते मोक्षकी इच्छासें द्वारकामें गोमती संगम ओर चक्रतीर्थ मुक्ति देनेवाले हे एसा निश्चय करके आये, ओर गोमतीमें स्नान संध्या

करे पीछे अन्न लेगा एसा निश्चय करके गोमती किनारे गये. ओर कपडा उतारके गोमती स्नान करनेके लीये हाथमें मृतीका लेते हे इतनेमें दैत्योने दुर्वासाकुं देखा ओर कोन हे एसा कहेके बोत मार मारने लगा.

दुर्वासा कहेते हे—मैं गरीब ब्राह्मण हुं ओर बोत भुख लगी हे. गोमती स्नान करे पीछे अन्न खायगा. मेरा नाम दुर्वासा हे, मेरेकुं क्युं मारते हो. दुर्वासाका कहेनेपर कोईका लक्ष नहीं गया ओर मारना बंध नहीं कीया. छेवट रुरु नामका एक दैत्य था उसने मार बंध कराया, ओर दैत्यो दुर्वासाका कपडा ले गये, दर्भ पानीमें डाल दीया एसा करके दुर्वासाकुं पकडके ले गये. ओर कहेने लगे के अब यहां आयगा तो तुमेरेकुं मार डालेंगे. एसा कहके दैत्योने छोड दीया ओर अपने स्थानकमें गये.

श्री द्वारका महातमका अध्याय ९ मा संपूर्ण.

अध्याय १० मा.

पातालमें दुर्वासाका जाना.

दुर्वासा कहेते हे--दैत्योकुं श्राप देनेसें मेरा तप नष्ट होवे ओर सब तपस्वी मेरी निंदा करे. मेरेकुं चक्रतिर्थमें स्नान करा शके एसा भगवान हे सो पातालमें हे उंसके शरण जाना एसा कहेके पातालमें दुर्वासा मुनि गये. बलीराजाकी दरबारमें गये वहां नाच होता था ओर आनंद होता था. दुर्वासा मुनिकुं देखके बलीराजाने पुजा करके आसनपर बीठाया ओर कहेने लगाके हे उत्तम मुनि दुर्वासाजी आपका पधारना केसा हुवा, हमकुं आज पावन कीया हे.

दुर्वासा एसा बचन सुनके आनंदमे आया ओर बलीराजाका द्वार पास त्रिविक्रम भगवानकुं देखके रोनेकुं लगा ने कहने लगाके रक्षा करो रक्षा करो. एसा कहके जो

मार पडाथा सो दीखाया. मार देखके भगवान क्रोधमें कहेने लगा.

भगवान कहेते हे--तुमेरा कोनने अपमान कीया ओर ऐसा मार मारा हे.

दुर्वासा कहेते हे--गोमती स्नान करनेकी इच्छासें हम गये वहां दैत्यो मेरा कपडा ले गये ओर मार मारके मेरेकुं नीकाल दीया हे. एसा बचन सुनके भगवान कहेने लगाके.

भगवान कहेते हे--हे उत्तम ब्राह्मण भक्तिके लीये बलीराजा पास हम बंधनमें हे सो तुम उसकी पाससें मेरी मंगनी करो. बांचनेवाला कहेगाके भगवान बलीराजाका द्वारपाल होके क्युं रहा उसका खुलासा थोडे हम इधर करतें हे.

सतयुगका अंतमें बलीराजाने इंद्रकुं जीता उनके लीये कष्यप रुषिके वहां वामनरुपसें भगवानने अवतार लेके त्रीविक्रम कहेवाये था ओर याचना करके बलीराजा पास तीन कदम पृथ्वी मागीथी ओर पृथ्वी दीया जब पातालमें बलीराजाकुं डाल दीया. बलीराजाने

२५

भक्तिसे भगवानकुं प्रसन्न कीया जब अनुग्रह करनेके लीये बलीराजाके वहां द्वारपाल होके भगवान रहें.

त्रीविक्रम भगवानका कहा मुजब बलीराजा पास भगवानकी मागणी कीये. हे राजा आप दान, भक्ति ओर यज्ञमें श्रेष्ट हो वास्ते भगवानकुं मेरी साथ भेजो जीससे गोमती स्नान हम करे.

बलीराजा कहेते हे--के हे ब्राह्मण आप कहेता हो एसा नहीं होगा क्युंके अपने शरीरमें हाथसें कोन अग्नी लगावे ? अपनी हाथसें कोन झेर खावे ? अपना सीर अपना हाथसें कोन काटे ? मेरा सरवस जाओ लेकीन वामनजीकुं नहीं दीया जायगा दुसरा जो मांगो सो हम देनेकुं तैयार हे.

दुर्वासा कहेते हे--मेरेकुं लोभी मत समजो. भगवानकी मेरेकुं जरुरीयत हे. दुसरेकी कुच्छ इच्छा नहीं हे.

बलीराजा कहेते हे—के हे ब्राह्मण तुमकुं मालुम हे ! के भगवानने वराह अवतार लेके हीरणाकष्यपकुं मारके पृथ्वीका हरण अपना बलसें कीया था. ओर मेरा दादा कोईसें नहीं मारा जाय एसा हिरण्याकषिपुकुं नृसिहरुप धरके मारा था ओर तीन कदम पृथ्वी लेके, विराट स्वरुप धरके मेरा राज्य लीया एसा भगवान मेरे हाथमें आया हे उसकुं नहीं छोडेंगे.

दुर्वासा कहेते हे--आप नहीं छोडेंगे तो हम देह यहां त्याग करेंगे क्युं के गोमती स्नान बीना प्रसाद नहीं पायगा. एसा सुनके बलीराजा कहेते हे--आपने जो करना हो सो करो लेकीन भगवानकुं नहीं छोडेंगे.

भगवान कहेते हे--हे मुनि आप निश्चींत रहो आपकुं गोमती स्नान में करा देगा भगवानका कहेना सुनके बलीराजा नीचे पडके भगवानका दोनु पाउं दोनु हाथसें पकडके कहेने लगे.

बलीराजा कहेते हे–हे महाराज आप मेरी पास बचनसे बंधे हुवे हो सो मेरी रक्षा करो. एसा सुनके दोनु चरण पादुका बलीराजाकुं देके बडा रुप करके दुर्वासा मुनि साथ गये. शेषनाग उसकी साथ गये ओर संगमपर जाकर दुर्वासाकुं कहाके तुमेरी इच्छा मुजब स्नान त्रपण करो, पीछे दुर्वासा बडा आनंदसे स्नान नीत्य त्रपण कीया.

श्री द्वारका महातम अध्याय १० मा संपूर्ण.

अध्याय ११ मा.

दैत्योका राजा कुसका वध ओर मीले हुवे वरदान.

वेदका अवाज सुनके दुर्मुख नामका दैत्य दुर्वासाकुं कहेने लगा, हे ब्राह्मण ? तुमकुं एक दफे जाने दीया तो दुसरी दफे मरनेके लीये क्युं आयेहो ? एसा कहेके

मारनेकुं गया जब भगवानने चक्रसे उनका सीर काट दीया इस बात दैत्योकुं मालुम हुइ जब दुसरा बोत दैत्यो आये. महायुध हुवा, बोत दैत्य मारे गये पीछे दैत्यका राजाकुं मालुम हुवा.

कुस क्रोधायमान हुवा जब सुनामा नामका दैत्यने उसकुं कहाके ये ब्राह्मणकुं जाने दो उसकुं विष्णु भगवानकी मदद हे.

कुस कहेते हे--विष्णु भगवानने गोलककुं मारा हे उनकुं हम मारेंगे. उसकुं बांधके लाओ. जीसकी पाससें छुटके जायगा उसकुं मारडालेंगे. इसपरसें बोत युध हुवा बोत दैत्यो मारे गये जब कुस भगवानकुं कहेने लगाके दुर्वासाकुं गोमती स्नान कराके आप जाओ एसा बचन सुनके

भगवान कहेते हे--सबका मोक्ष करनेवाली गोमतीकुं तुम रोकके बेठे हो ? तुमकुं जीता रेनां हो तो तुम लडका लडकी सह चला जाओ. यहां नहीं रहेना ओर नहीं

जाओगे तो तुमेरा निर्वंस नीकाल दीया जायगा एसा सुनके

कुस कहेते हे--विष्णु आप मेरेकुं मारोंगे तो मेरा मोक्ष होगा ओर में मारुंगा तो कीर्ती होगी अब युध करो. एसा सुनके भगवान ओर बलभद्र तैयार होके हथीआरोंसे दैत्योपर मारा चलाया ओर सब दैत्योका नास हुवा जब कुस दैत्य सांग लेके विष्णु भगवानकुं मारनेकुं गये उसकुं सुदर्सन चक्रसे भगवानने टुकडा करके कुसकुं मारा. कुसका शरीरका टुकडा लेके दैत्य शिवालयमें गये के कुस दैत्य सजीवन हुवा. जब भगवान दुर्वासा मुनीकुं पुछने लगाके इसका कारण क्या हे ? दुर्वासा कहेते हे के शिवका वरदान हे. तब भगवानने कुसकुं मारके जमीनमें दाटे ओर शबके पर शिवलींगकी स्थापना कीया--जब कुस कहेने लगाके भगवानने दगा कीया हे. अब विष्णु पास वरदान मंगनां. एसा बिचार करके भगवानकुं कुस कहेते हे के अब मेरा रक्षण करो.

भगवान कहेते हे--हे दैत्योका राजा कुस तेरीपर मैं प्रसन्न हुवा हुं जो वरदान मागना हों सो माग.

कुस कहेते हे--के हे प्रभो मेरा नाम कायम रहे ओर जो शिवलींग आपने स्थापन की हे कुसेश्वर मेरा नाम उसका नाम परसे रखो ओर मेरी कीर्ती बढे ऐसा करो.

भगवान कहेते हे--तथास्तु. जो लोक द्वारका यात्रा करनेकुं आवे सो दरेक आदमी वेसणका लडु एक, घीका दीवा ओर एक पैसा दक्षणा तुमकुं न चडावे वहां तक आधी जात्राका फल जात्रीकुं मीले ओर चढ्ढावे उनकुं पुरा फल मीलेगा.

श्री द्वारका महातमका अध्याय ११ मा संपूर्ण.

अध्याय १२ मा.

पंचतीर्थोंकी माहीती.

गोमती कीनारे हरिकुंड जहां स्नान होते हे वहां स्नान करके अगर चर्णामृत लेके प्रथम कीनारापर नरसिंह महेता जीसकी हुंडी भगवानने स्वीकारीथी उसका दर्सन करना. ओर उनकी बाजु गोवर्धननाथजीका दर्सन करना. पंचतीर्थोमें खाली हाथसें दर्सन नहीं करना क्युं के फल नहीं मीलता हे. वहांसे आगल चलते प्रथम ब्रह्माजीघाट, गौतमघाट, गंगाघाट, पांडवघाट, रुषिघाट, गौघाट, वासुदेवघाट, संगमघाट इतना घाट हे वहां चर्णामृत लेके ब्राह्मणकुं दक्षणा देना चाहीए एसा महातम हे. गौघाटपर गौकादान अवश्य करना चाहीए. वासुदेवघाटपर गौमुखी, आसनीयुं, पंचपात्र, आचमनीका दान माला समेत देनेका महातम हे. संगमघाटपरसें कीनारे कीनारे चलतेमें चक्रतीर्थ आते हे वहां

रेतका लडु बनाते हे ओर खेत खेडाके जो वावेगा एसा मीलेगा उसके लीये रुपादान वहां खेतमें रखनेका महातम हे. ओर एसा करनेसे जात्रामें कोई वीघन नहीं आते हे. आगे रुपणकुंड हे वहां जांबुवतीजी रीछका अवतारसें मुक्त हुइथी वहां चांदीकी सीली देनी पडती हे. आगे रत्नेश्वर महादेवकी पास मकानदानका संकल्प होता हे. आगे जांबुवतीजी, सिधेश्वर महादेव, ज्ञानवाव, रामचंद्रजी, सावीत्रीवाव जीसमेंसे रणछोडजीकी मुर्ती नीकली हे, आगे दामोदर कुवा, वहां नरसींह महेताकी हुंडी भगवानने स्वीकारीथी, वहांसे "भद्रकाली" भागीरथी गंगा, रुकमणिका मंदीर जीसकी द्वारका महातममें कथा हे सो होके गयाकुंड, ककलासकुंड, जयविजय भगवानका परोडीयाका दर्सन करके हरीकुंड पर होके मंदीरमें दर्सन करनेसे परिक्रमा पूरी होती हे. ब्राह्मण (पंडाकी आज्ञा बीना कोई कुच्छ करते हे उसकुं फल नहीं मीलते हे क्युं के पंडाकी लोपना करनेसे महा पाप हे. श्री द्वारका महातम अध्याय १२ मा संपूर्ण.

३३

अध्याय १३ मा.

ककलास कुंडका महातम.

द्वारकामें राजा नृग काकींडाका अवतारमेंसे मुक्त केसें हुवा एसा प्रश्न रुषिओ प्रल्हादजींकुं पुछते हे.

प्रल्हादजी कहेते हे–नृगराजा लक्ष्मीवाले, बुद्धिशाळी होनेसे हमेस हजार गौकादान करतेथे. एक दीन जैमिनी नामका ब्राह्मणकुं एक गौ नृगराजाने दानमें दीथी उसकुं पाणी पीलानेके लीये ब्राह्मण गौकुं लेके गया. रस्तेमें गौ हाथीकुं देखके गभराके भगी ओर नृगराजाकी दुसरी गौ जो थी उसका टोळेमें मील गई. ये बात राजाकुं मालुम नहींथी और जैमिनी ब्राह्मण गौकी तलास करके पता न मीलनेसे अपने मकानमें आया. दुसरे दीन ये गौ सोमसर्मा नामका ब्राह्मणकुं दानमें गई, ये जैमिनी ब्राह्मणके

देखनेमें आई जब दोनु ब्राह्मणका झगडा हुवा तब राजाकी पास दोनु आदमी अदालतमें गये. दोनु ब्राह्मणकुं एकज गौकादान दो बखत दीया जीससें ब्राह्मणोने राजाकुं श्राप दीया के तुमकुं कार्कींडाका अवतार प्राप्त होगा.

राजा कहेते हे—महाराज आपने श्राप दीया उनका नीवारण केसे होगा, एसा कहेनेसे दोनु ब्राह्मणो कहेते हे के हे राजा द्वापरयुगमें देवकीजीका उदरसें भगवान प्रगट होके खेलनेकुं नीकलेगा ओर तेरेकुं जलमेंसे बहार फेंक देगा जब तुमेरा उधार होगा. इसी तरेहसें उसका उधार भगवानने कीये पीछे वरदान दीया के ये कुंड तुमेरा नामसें प्रख्यात होगा. ये कुंडमें जो लोक स्नान करेंगे उसकुं मुक्ति मीलेगी एसा कहके भगवान अंतरध्यान हो गये.

श्री द्वारका महातम अध्याय १३ मा संपूण.

अध्याय १४ मा.

ब्रह्मकुंड इंद्रेश्वर महातम.

यादवोकी साथ श्री कस्न भगवान द्वारकामें आये जब ब्रह्माजी भगवानका दर्सनकुं आये उसने एक कुंड बांधके अपना नामसे उसका नाम ब्रह्मकुंड रखा हे. ये कुंडमें स्नान करनेसे सबी पाप नास होते हे.

पीछे ईंद्रेश्वर नामसें द्वारकासें तीन माईल दुर शिवलींग स्थापन कीया गया हे.

श्री द्वारका महातम अध्याय १४ मा संपूर्ण.



अध्याय १५ मा.

नागनाथ महातम.

नागनाथ महादेव गोपीतलाई के रस्तेमें आता हे, वहां महादेवका लिंग बहोत पूरातनी ओर बार लींगमें ज्योतीर्लिंग हे. वहां शिव पूजन करनेंसे नागलोककी प्राप्ति होती हे. ये सब तीर्थ उपरांत बोत तीर्थ हे. लेकीन जब समुद्रने पृथ्वीकुं डुबा दीया उसमें बोत तीर्थोंका नास हुवा हे परंतु जो आदमी दुवारकाकी प्रदक्षणा करतेहे उसकुं ये सब तिर्थोंका फल मील जाता हे.

श्री द्वारका महातम अध्याय १५ मा संपूर्ण.

अध्याय १६ मा.

सिधेश्वर महातम.

सनकादिक रुषियो द्वारकामें आके रहा तब ब्रह्माजीने शिव पूजनकी आज्ञा दी उससे रुषिओ गौशालामें गये और शिवकी भक्ति करने लगे, शिवलींगकी स्थापना की हे ओर सिधेश्वर नाम रखा गये हे. वहां एक बावडी नीकाली गई हे उनका नाम ज्ञानवाव हे ये वावमेंसे चर्णामृत लेनेसे अधिक ज्ञान प्राप्त होता हे.

श्री द्वारका महातम अध्याय १६ मा संपूर्ण.



अध्याय १७ मा.

यात्रा करके जो आदमी जावे उसका दर्शनका फल.

(वसिष्टे दिलीपकुं कहीथी सो वारता.)

मार्कंडेय रुषि कहेते हे–जो आदमी प्रत्येक वरस द्वारका जाते हे उसका चर्णकी रजसें अघोर पापीकुंभी स्वर्गकी प्राप्ति होती हे. श्री क्रष्णका दर्सन करनेवाला आदमीका दुसरा कोई लोक दर्सन करे उनका ये जन्मका पापका निवारण होता हे. हे राजा पूर्वे वसिष्ट मुनिने दिलीप राजा पास जो वृतांत कहाथा सो सुनो.

वसिष्ट कहेते हे--हे दिलीप काशीमें पाप करनेसे जो वज्र लेप हो जाता हे सो प्राग के दुसरे कोइ ठीकाणे मीटते नहीं हे. एसा सुनके दिलीप कहेते हे के दुसरा कोन तीर्थ एसा हे के काशीमें भये हुवे वज्र लेप नास होवे ? एसा सुनके वसिष्ट

कहेते हे के काशीमें एक दंडी सन्यासी रहेता था. ये अपना सतकर्ममें कुसल था ओर धर्म जाननेवाला था. वहां एक नव योवना स्त्री आके अपनां वस्त्रो उतारके गंगाजीमें स्नान करनेकुं गई उनकुं देखके सन्यासी स्त्रीपर आसक हुवा. स्त्री बडी व्यभिचारणी थी. उस लीये दोनुका समागम हुवा ओर सन्यासि कर्मसे भ्रष्ट हो गये ओर स्नान, ध्यान, जप, तप छोडके मांस मदिराका भक्षण करने लगा. एक दिन मांस लेनेके लीये सन्यासी जंगलमें गये वहां एक चंडालणीपर आसक होके भ्रष्ट हुवा, ओर चंडालणीका मकानमें मर गया. मरण पीछे पाप भोगनेके लीये वाघ, सर्प, कुता, नहार, शियाळ, सुवर ओर गधा एसा अवतार लेके छेवट राक्षसका अवतार आया ओर पर्वतमें फीरने लगा. वहां एक दीन द्वारकाकी जात्रा करके एक आदमीका आना हुवा उसका दर्शन पानेंसे राक्षसका अवतार छुट गया ओर पूर्व जन्मका ज्ञान प्राप्त हुवा. राक्षस जात्रा करनेवाला आदमीकुं प्रणाम करके पुछने लगाके कहांसे आते हो.

जात्रावाला आदमी कहेते हे श्री क्रस्न परमात्माका दर्सन करके द्वारकासें आते हें एसा सुनके राक्षस द्वारकाकुं गये ओर अपना पाप भस्म होनेंसे वैकुंठमें गये.

श्री द्वारका महातम अध्याय १७ मा संपूर्ण.

अध्याय १८ मा.

द्वारका महातमका फल.

बलीराजाकुं प्रल्हादजी कहेते हे के जो आदमी कलीयुगमें नित्य द्वारका महातमका पाठकरे उनकुं सुवर्ण, गौ, हाथी, पृथ्वि, मकानका दान कीया बराबर पुन्य होते हे. ओर जो आदमी द्वारका महातम दुसरेकुं सुनावे उसीकुं दरेक मासका अपवास करनेका फल मीलते हे. ओर कलियुगमें जो आदमी द्वारका महातमका बिस्तार करे

उनका सबी पाप नष्ट हुवा एसा समजना. जहा तक कोई आदमी द्वारका महातम लीखे नहीं वहा तक उसका शरिरमें ब्रह्महत्याका पाप रहते हे. जो आदमी कलयुगमें द्वारका महातम लीखे उसीकुं सर्व तीर्थ करनेका फलभी मीलता हे. द्वारका महातम सर्व तीर्थो ओर सर्व दानका फल देनेवाला हे ओर सर्व रोग नास करनेवाला हे, अधिक संपती देनेवाला हे. जीसका मकानमें द्वारका महातम हे उसकुं पित्रींकुं त्रप्त करनेका फल मीलता हे. जे जगोपर द्वारका महातमका पाठ होता हे वहां विष्नु भगवान पधारते हे ओर चार वेद ओर सब देवताओभी पधारते हे.

ये द्वारका महातम सुनके द्वारका महातम सुनानेवाला ब्राह्मणकुं दुध देनेवाली गौ अगर यथाशक्ति दक्षणा दे के राजी करना चहीए. वास्ते हे राजा द्वारका महातम सुनके मकानमें रखनेसें सब पापका नास होते हे. जो आदमी जात्रा सुफल करे बीना जाते हे उसकी जात्रा नीष्फल होती हे क्युं के ब्राह्मणका अपमान

करनेसे भगवान नाराज हे. भगवानका पंडा दुर्वासा रुषिने भगवानकुं श्राप दीया लेकीन भगवानने पंडाकी आज्ञा उलंघन नहीं कीया हे इस तरेहसें ये तीर्थमें जो आदमी पंडाकी आज्ञा बीना ओर जात्रा सुफल करे बीना जाते हे उनकी जात्रा नष्ट होके पीत्रु नरकमें गीर पडते हे.

श्री द्वारका महातमका अध्याय १८ मा संपूर्ण.

अध्याय १९ मा.

बेट संखोधार महातम.

प्रल्हादजी कहेते हे—हे रुषिओ पूर्वे अर्जुनराजा श्री क्रस्न भगवानकी पास हाथ जोडके कहेने लगाके हे भगवान संखोधारके लीयें मेरे मनमें कुच्छ शंका हे उसके लीये संखोधारका महातम मेरेकुं सुनाओ.

भगवान कहेते हे--हे अर्जुन! संखोधार जेसा दुसरा एकबी तीर्थ नहीं हे. प्रभास जेसा तीर्थों, गंगा आदिक नदीओ, पर्वतो, समुद्रो, ओर सबी देवताओ संखोधारमें वास करतें हे. जो आदमी अपना मकानमें बेठके संखोधारका नामका स्मरण करे उसकुं फीर जन्म नहीं लेना पडेगा. जो आदमी संखोधारमें रहे के संखनारायणका दर्सन करे उसकी सेंकडो पेढी विष्णु लोकमें जाती हे. ओर एक लाख गौका दान करनेसे जो पुन्य होते हे इतना पुन्य संखनारायणका दर्सनसें होते हे. हे अर्जुन? ब्रह्माने सब तिर्थोंकुं उत्पन करके सबी तीर्थोंका पुन्यका अंदाज नीकालने लगा जब मालुम हुवा के जेसें वैध्रतमें दान पुन्यकी संख्या नहीं हे एसे संखोधारमें स्नान करके संखनारायणका दर्सन करनेवालाका पुन्यकी संख्या नहीं हे. मतलब के बोत पुन्य हे. पृथ्वीमें जो जो तीर्थो हे सो सब संखोधारमें रहेते हे. संखोधार जेसा कोई तीर्थ पृथ्वीमें नहीं हे. ओर सब मीलके साडा तीन करोड तीर्थ संखोधारमें रहेते हे. उसीके लीये

संखोधारका दर्शनसे महापातकी जैसा के ब्रह्महत्या, गौहत्या, स्त्रीहत्या और बालहत्या करनेवाला और गुरुकी पत्नि साथ गमन करनेंसे जो पाप लगते हे सो सब पाप नष्ट हो जाता हे. एक बखत अपनी उमरमें संख तलावका स्नान ओर संखनारायणका दर्सन करनां उसीके लीये ऐसी शास्त्रकी आज्ञा हे.

श्री द्वारका महातम अध्याय १९ मा संपूर्ण.

अध्याय २० मा.

गोपी तलाव महातम.

प्रल्हादजी कहेते हे--यादवोका राजा कंसकुं मारके श्री क्रस्न भगवानने मथुरांमें
४५ उग्रसेनका अभिषेक कीये पीछे उद्धवजीकुं अपना स्नेहीओ ओर गोपीओकुं खुश

करनेके वास्ते मथुरामें भेजा वहां जसोदाजी ओर नंदरायजीने श्री क्रस्न भगवानका समाचार पुछा.

उद्धवजी कहेते हे—के भगवान कुसल हे ओर मथुरांसें गोकुल आके अपना अच्छा करेगा. एसी बातचित करते करतेही रात चली गई. फजरमें रथ नंदरायके मकान पास देखके गोपी आपसमें बात करनेकुं लगी के कोन आये हे, जब मालुम हुवा के उद्धवजी आये हे. तब गोपी पुछनेकुं चली ओर भगवानका खबर पुछने लगी. गोपी कहेती हे के ये हमेरा मन हरके गये हे, सो कहां पर हे हमकुं बताओ. एसा बचन सुनके ओद्धवजी कहेने लगाके मेरेकुं बुलानेके लीये भेजा हे तुम सब चलो. ऐसा सुनके उद्धवजी साथ गोपीओ द्वारका राजी होके आई. पीछे उद्धवजीने कहाके अब तुम यहां रहो. यहां श्री क्रस्न भगवान पधारेंगे ओर तुमेरा उद्धार करेंगे. एसा सुनके गोपीओ कहेने लगी के भगवान हमकुं बताओ. पीछे उद्धवजीने भगवानकुं बुलाया. भगवानकुं

देखके गोपीओ खुस होके कहेने लगी के आज हमेरा जन्म सफल हुवा.

भगवान कहेते हे–हे गोपीओ तुम ये तलावमें स्नान करो. गोपी कहेती हे के हमकुं ये तलावका महातम सुनावो.

श्री क्रस्न भगवान कहेते हे के–हे गोपीओ मेरी साथ तुमेरा संबंध हुवा हे जीससें स्नान करनेके लीये हमकुं इधरही रहेनां पडेगा और हमारा रहनेंसे जो आदमी यहां स्नान करेगा उसकुं गंगाजीका फल मीलेगा ओर विष्णु लोकको प्राप्ति होगी.

गोपी कहेने लगी--हे महाराज आप प्रसन हुवे हो तो यहां हमेरा नामसें प्रसिद्ध तलाव बनाना चाहीए. एसा सुनके श्री क्रस्न भगवानने एक तलाव बनाके उसका नाम गोपी तलाव रखा ओर गोपीओकुं यहां रहनेकी आज्ञा करके भगवान स्वधाममें पधारे. वहांसे ये तलाव गोपी तलावका नामसें प्रसिद्ध हे.

श्री द्वारका महातम अध्याय २० मा संपूर्ण

अध्याय २१ मा.

पींडतारक महातम.

प्रल्हादजी कहेते हे--द्वारका यात्रा करके पींडारक (पींडारा) नामका तीर्थमें जाना के जहां विष्णु चतुर्भुज रहे हे. वहां कपालमोचन नामका प्रख्यात देवता रहेते हे, उसीका जो दर्सन करे सो ब्रह्महत्या जेसा पापसें मुक्त होते हे. ये बडा तिर्थमें रुकिमवती नदी हे. ये कुंड रुपतीर्थमें श्राध करनेवाला आदमीके पीछाडी श्राधकी ईच्छासें सब पित्रीओ आते हे. वहां अगस्य नामका एक तलाव हे वहां स्नान करके विधिपुर्वक श्राध करनेसे गया श्राधका फल मीलता हे. वहां रुकिमवती नदीमें गंगा, गया, कुरुक्षेत्र, नैमिषीरण्य ओर पुस्कल आदि त्रैलोकका सब तिर्थो, देवताओ आते हे उसमें कुच्छ शंसय मत समजनां.

पित्रुओ कहेते हे के हमेरा कुलमें कोई एसा पुरुष उत्पन होके ये बडा तिर्थ ४९
पिंडारकमें पिंडदान दे जीससें हमेरी गती होवे. यहां सब पित्रुका वृक्षपणा, पिशाचपणा, प्रेतपणा, पशु पक्षीका अवतार ओर नर्कमें डुबा हुवा सबी पित्रुकी मोक्षगती होती हे. वहां पींड तरते हे. वहां श्राध करना ये गया श्राधसें अधिक हे.

श्री द्वारका महातममें पींडतारक महातम ये नामका
अध्याय २१ मा संपूर्ण.

अध्याय २२ मा.

पीपा भक्तकी छापका महातम.

कलयुगमें सोनेकी द्वारका समुद्रमें गुम होई जब भगवानका भक्त पीपोजी था,
४९ ये दीन ओर रात भजन कीर्तन करते थे, ये पीपा भगवानका ऐसा भक्त था के ये

सोनेकी द्वारका जब जलमें डुब गई तबभी द्वारकाका और भगवानका दर्शन कर शकता था. कोई एक आदमीने ये भक्तकी ठठा कीया ओर कहेने लगाके तुमको दर्शन होता हो तो भगवानका महेल (मकान) तुमने देखा होगा. एसा सुननेंसे पीपा भक्तकुं लगा के, ये मेरी ठठा करते हे उससें समुद्रमें पीपा भक्त पडके सोनेकी द्वारकामें भगवानकी पास जाके दर्सन कीया. भगवानने कहा के तुम अब पीछे जाओ. एसा सुनके पीपा भक्त कहेने लगाके हे महाराज हम जायगा तो सही लेकीन मेरी बात सची कोई नहीं मानेगा. पीछे भगवान प्रसन होके पीपाका हाथमें संख, चक्र, गदा, पद्म देके कहा के ये मेरा पका नीसान हे. ये छाप जो कोई आदमी लेगा उसकुं यमराजा दंड नहीं देयगा एसा कहा. जब पीपा भक्त फीर अपने स्थानकपर आरंभडा आ पहोंचे. जीस दिनसें जात्री वहांसे छाप लेते हे.

श्री द्वारका महातम अध्याय २२ मा संपूर्ण.

अध्याय २३ मा.

ओखा नाम केसे पडा ?

पूर्वे बहुलाश्व राजा नारद मुनीकुं पुछने लगा के, हे मुनी तीन लोकमें प्रख्यात द्वारकापुरीमें श्री कृष्ण भगवान रहेते हे ओर ये पुरी श्री कृष्णका अंगसे उत्पन हुई हे एसा सुना हे सो ये बात हमकुं सुनाओ.

नारदजी कहेते हे--वैवश्वत मनुके वंसमें सर्याति नामका एक चक्रवर्ति राजा था. उसने दस हजार वर्ष पृथ्वीका राज्य कीया था. उसकुं उतानवर्हि, आनर्त, ओर भुरिश्रेण एसा तीन लडका था. एक दीन तीन पुत्रकुं राजा तीन दिसाकी पृथ्वीका राज देके कहेने लगाके ये पृथ्वीमें मेरा राज हे सो तुम करो. एसा सुनके आनर्त कहेने लगाके पिता ? ये पृथ्वी तुमेरी नहीं हे ओर तुमने उसकुं अपना बलसें जीतीबी नहीं हे. क्युं

५१

के श्री कृष्ण जैसा कोई बलवान नहीं हे. फोकट अहंकार करना नहीं. एसा बचन सुनके अपना पुत्र आनर्तकुं राजा कहेने लगाके तुम मेरा राज छोडके चला जा, तुमकुं श्री कृष्ण भगवान नई पृथ्वी देगा ओर तेरेकुं मदद करेगा. एसा कठीन बचन सुनके पश्चिम समुद्र किनारापर जाके तपश्चर्या करनेकुं बेठे. एसा करते करते दस हजार बर्ष पीछे श्री कृष्ण भगवान प्रसन हुवा ओर दर्सन देके कहा के हे आनर्त ! हम तेरी भक्तिसें प्रसन होके तेरेकुं वरदान देते हे के इच्छा होवे सो मंगनां. जब हाथ जोडके आनर्त कहेते हे के मेरा पिताने देसनिकाल कर दीया हे उससें आप मेरी पर कृपा करके मेरेकुं दुसरी पृथ्वी देना. जहां रहे के में आपकी भक्ति करुं. जब भगवान कहेने लगाके--हे राजकुमार ! जगतमें दुसरी पृथ्वी नहीं हे. लेकीन तेरी भक्ति देखके वैकुंठमेंसे एक हजार जोजन पृथ्वीका एक टुकडा तेरेकुं देता हुं, एसा कहेके सुदर्सन चक्र समुद्रमें धरके उसकीपर सो जोजन पृथ्वीका टुकडा रखा जब आनर्त राजाने एक

लाख वर्ष तक वहां राज करा ओर ये पृथ्वी वैकुंठ जैसी होने लगी. ये बात सर्यातिकुं मालुम हुई ओर श्री कृष्णका प्रेम देखके आश्चर्य हुवा. पीछे आनर्तका पुत्र रेवतराजाने द्वारकाका राज्य करके अपनी कन्याकुं लेके स्वर्गमें गया. आनर्तकुं वैकुंठमेंसे ये पृथ्वी मीली जीससें पवीत्र हे और इसीका ओखा नाम पडा हे. ओर श्री कृष्णका वास यहां हे. (गर्ग संहिता अध्याय ९ मा).

श्री द्वारका महातम अध्याय २३ मा संपूर्ण.

अध्याय २४ मा.

बेट संखोधार नाम केसे पडा !

गर्ग संहीता अध्याय १२ में कहेते हे के--त्रीत नामका एक मुनी ओखा देसमें आये थे. जब एक तलावमें स्नान करके भगवानकी पूजा ध्यानमें (ये तलाव हाल

संख तलावसें प्रसिद्ध हे) बेठा उसी वखत उसका शिष्य कक्षिवानने पुजाका संख था सो चुरा लीया. मुनि ध्यानमेंसें जागृत हुवा ओर संखकुं देखा नहीं. जब क्रोधायमान होके श्राप दीया के जीसने मेरा संख चुराया होवे सो संख हो जायगा. ये श्रापसें कक्षिवान संख हो गया. कक्षिवानने मुनीकी क्षमा मंगके अपना उद्धारके वास्ते बिनंती कीया. जब मुनि शांन्त हुवा तब कहेने लगाके मेरा श्राप मिथ्या न होगा, अब भगवानकी भक्तिसें तेरा मोक्ष होगा. वहांसें समुद्रमें रहे के भगवानकी भक्ति करता था. एक दीन भगवान प्रसन होके अपने हाथसें कक्षिवानकुं समुद्र बहार नीकाल के ओद्धार कीया ओर संखका स्वरुप छुटके स्वर्ग लोकमें गया. संखका उद्धार हुवा जीससें संखोद्धार नाम पडा हे.

श्री द्वारका महातम अध्याय २४ मा संपूर्ण.

संपूर्ण.